Indian Journal of Modern Research and Reviews

This Journal is a member of the *'Committee on Publication Ethics'*

Online ISSN: 2584-184X

Review Article

मौखिक परम्परा और संताली साहित्य

AUTHOR(S): बसन्ती सोरेन[1*], प्रो. डॉ त्रिवेणी नाथ साहू[2]

सारांश

यह शोध-पत्र संताली साहित्य की मौखिक परम्परा की सांस्कृतिक विरासत, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि तथा उसकी समकालीन उपयोगिता का विवेचन करता है। संताली समाज में मौखिक साहित्य, लोकगीत, लोकगाथाएँ, कथाएँ और पारंपरिक गीतों के माध्यम से न केवल सांस्कृतिक मूल्यों का संरक्षण हुआ है, बल्कि सामाजिक चेतना और सामूहिक स्मृति का संप्रेषण भी हुआ है। जब लेखन प्रणाली प्रचलन में नहीं थी, तब मौखिक परंपरा ही विचारों और ज्ञान का माध्यम बनी। यह परम्परा आज भी आदिवासी समाजों में जीवित है, जहाँ हर शब्द संस्कृति, धर्म, समाज और परंपरा का संवाहक है। शोध का मुख्य उद्देश्य यह जानना है कि इस मौखिक परम्परा ने संताली साहित्य को किस प्रकार समृद्ध किया है और आधुनिक समय में इसका क्या स्थान है।

KEYWORDS: मौखिक परंपरा, संताली साहित्य, लोकगीत, आदिवासी संस्कृति, लोकगाथा, पारंपरिक ज्ञान, सांस्कृतिक विरासत, सोहराय गीत, काराम विनती, लोककथाएँ।

परिचय

भारतीय साहित्य की मौलिकता उसकी विविधता में निहित है। भारत की जनजातियाँ, विशेषकर संताल जनजाति, अपने समृद्ध मौखिक साहित्य के लिए प्रसिद्ध हैं। जब लेखन प्रणाली का उदय नहीं हुआ था, तब समाज मौखिक माध्यम से ही साहित्य और ज्ञान का संरक्षण करता था। संताली भाषा की परंपरा में मौखिक साहित्य का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है, जिसे गीत, कथा, कहावत और लोकअनुष्ठानों के माध्यम से पीढ़ी दर पीढ़ी संजोया गया है। संताली समाज के पर्व-त्योहार, जैसे सोहराय, काराम आदि, अपने साथ गहरे साहित्यिक अर्थों को भी लिए होते हैं। यह परम्पराएं मात्र उत्सव नहीं, बल्कि सामाजिक समरसता और सांस्कृतिक पहचान की संवाहक भी हैं।.

उद्देश्य

1. संताली साहित्य में मौखिक परंपरा की भूमिका का विश्लेषण करना।
2. मौखिक साहित्य के रूपों – लोकगीत, लोकगाथा, कथाएँ – का संरचनात्मक अध्ययन करना।
3. आदिवासी समाज में मौखिक परंपरा के माध्यम से सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्यों के संचरण को समझना।
4. आधुनिक युग में मौखिक परंपरा के अस्तित्व और संकट का मूल्यांकन करना।
5. संताली साहित्य में मौखिक परंपरा के संरक्षण के उपाय सुझाना।

Article History

- **ISSN**: 2584-184X
- **Received:** 27 May 2024
- **Accepted**: 25 June 2024
- **Published:** 30 June 2024
- **MRR:**2(6) June 2024: 40-42
- **©2024, All Rights Reserved**
- **Peer Review Process:** Yes
- **Plagiarism Checked**: Yes

Authors Details

बसन्ती सोरेन[1]
शोधार्थी, जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग, राँची विष्वविद्यालय, राँची।

प्रो. डॉ त्रिवेणी नाथ साहू[2]
शोध निर्देशक, रांची विश्वविद्यालय, जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग, रांची, झारखंड, भारत

Corresponding Author

बसन्ती सोरेन
शोधार्थी, जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग, राँची विष्वविद्यालय, राँची।

© 2024 बसन्ती सोरेन, प्रो. डॉ त्रिवेणी नाथ साहू. This is an open access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND) https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

मौखिक परम्परा और संताली साहित्य

साहित्य समाज की दर्पण है। हम जानते है कि भारत साहित्य की भूमि है। यह पुरातन समय से ही ऐसा रहा है। जब कोई मानव समाजों और सभयताओं के इतिहास का जायजा लेता है तो पता चलता है कि यही एक ऐसा क्षेत्रा है जो विभिन्न भाषाओं की बहुलता संस्कृति एवं भाषा परिवरों के रहते हुए भी एकता है। लोगों को अपने विचारों एवं भावनाओं का उचित मंच प्रदान करते हैं। जिसका परिणाम बेहतरीन साहित्यिक रचनाओं के एक उदार मिश्रण के रूप में सामने आया है। इसमें हर कोई किसी भी औपचारिक वर्गीकरण पर अधिक ध्यान दिये बिना अपनी स्वयं की साहित्यिक रचना करने में सक्षम था। यही कारण है कि प्रत्येक भाषा में साहित्य का समृद्ध संग्रह हो रहा है।

दुनिया के कई हिस्सों में शुरूआत बहुत पहले ही मौखिक परम्परा लोकप्रिय हुआ करता था। नई दुनिया में लेखन प्रक्रिया जब प्रारम्भ हुआ तो अनोखी शैलियों से साहित्यिक रचनाओं विभिन्न भाषा परिवारों की वृहत रूप लेना शुरू किया। भारत में इन्डोआर्यन द्रविड़ियन के साथ आस्ट्रिक भाषाओं में भी मौखिक परम्परा के साथ लिखित साहित्य रचनाएँ होने लगी। जिसमें हम यहाँ संतोली साहित्य के मौखिक परम्परा का साहित्य के संबंध में उल्लेख करने की संक्षिप्त विचार रख रहे हैं।

प्राचीन भारत में सभ्यता एवं संस्कृति तथा धार्मिक परम्पराओं के एक रूप में बांधकर रखने में मौखिक साहित्य का चलन था। प्राचीन काल भारतीय संस्कृति का मूल रूप से साहित्यिक चित्राण मौखिक साहित्य के परम्परागत विचारों एवं उनकी विरासत में निहित है। संस्कृति केवल समाज की मानवों को व्याख्याचित करता है बल्कि संदर्भ के तौर पर भी क्रियाषील दिखता है। प्राचीन भारतीय साहित्य का वृहत अंष मौखिक अर्थात बोले गए शब्द को अभिव्यक्ति स्वरूप है, और वहाँ तक उनका संरक्षण का प्रष्न है वह भी मौखिक परम्परा संबंधित रखता है। सदियों तक चलती आई कठिन और गुढ़ रहस्य वाचन के आधार पर एक भी अक्षर के खोए बिना ''काराम बिनती'' संरक्षित रखा गया है। विदेषियों के विभिन्न विद्वानों के आगमन के बाद भी संताली साहित्य की मौखिक परम्परा ब्रिटीष लेखक आर*0* कार्सटेयर तथा पी*0*ओ*0* बोडिंग ने लेखन साहित्य का उद्भव अपनी भाषा में अनुवाद कर प्रयास किया है हमें उस तथ्य को समझना है कि ब्रिटिष लोगों को संताली साहित्य के बारें में सहजता से अध्ययन करने का सफलतापूर्वक जानने की कोषिष की। परिणाम यह हुआ कि काफी दिनों तक इन भाषा को सीखने एवं उनकी लिपि में पुस्तक रचना की तो समाज में प्रभाव पड़ना शुरू कर दिया।

संताली साहित्य को मूर्त रूप देने के लिए अंग्रेजों ने बहुत सारी रचनाएँ संताली अंग्रेजी तथा विभिन्न लोक कथाओं का विनती काराम विनती तथा शब्दकोष संताल मैगजिन आदि पुस्तकों की रचना की।

मौखिक परम्परा को साहित्य के रूप में लेखन कला के माध्यम से उन्होंने बहुत सारे शोध - कार्य किये तथा अंग्रेजी भाषा में लिखने की प्रक्रिया शुरू किया जो आज भी रोमन संताली के नाम से जाने जाते है।

संताली में हापड.ाम पुथी, काराम विनती एवं संताली डिक्षनरी की रचना इसी की कई उदाहरण है। आज देष की मौखिक परम्परा और आदिवासी (संताली) का महत्व नहीं दिया जाता, पर यह अच्छी तरह याद रखा जाना चाहिए कि मौखिक से लेखन परम्परा तक प्रक्रिया बहुत पहले उद्भव हुआ होगा जो इस गीत के माध्यम से जानते है:-

सोहराय सेरे´
सि गुबूड-गुबूड मा़यना ि़न्दा झा़ेमा़ेर-झोमोर
ओकोय को़ को़ गुबूड-गुबूड ओकोय को़ को़ झा़ेमा़ेर-झोमोर
इ´गे नायो नाचोनिया माराड. दादा मान्दाडि.या
ताला दादा हा़रला़ ला़ला़ तिरया़य ओरोड. कान।
रा़सी आतो़ कुड़ी - कोड़ा गबोल आटाल गेलबार आटाल मेनाक़् को़ ना दाय
सोना माला पि*x*या़र तेको़ साजावाकान लुमाड़ साड़ी का़चनी टेको बान्देयाकादा।
का़ली तेलाड. ओल कोआ, कागोज रेलाड. छापा को
पीढ़ी चेतान पीढ़ी ला़गीत ना़थी ताहेंना।

अर्थ:- सोहराय अवसर पर गीत है। महान पर्व संतालों का एक महत्वपूर्ण पर्व है। दिन और रात, आकाष और पाताल उनकी गीत नृत्य से झूम उठा है, ये लोग कौन है*?* इस कार्यक्रम में शोभा बढ़ाने के लिए ही नहीं ये रीति है। भाई मान्दर बजा रहे हैं, बहन नाच रही है, मंजला भाई बांसुरी बजाने में मगन है। सारे गांव कस्बा टोला सभी झूम उठे है दिन रात ऐसी स्थिति हो गई है मानो इस धरती में दुःख नहींि है, सुख ही सुख है इन कलाकारों के द्वारा संदेष जाता है, यहाँ कोई गरीब नहीं है सभी सुखी सम्पन्न है। इसकी इतिहास को कलम से लिखकर कागज में छापकर पीढ़ी दर पीढ़ी के लिए ण्क नेल या परचा के रूप में काम किसी दिन आयेगा।

मौखिक परम्परा का बहुत महत्व है। जब कोई प्रिटींग प्रेस नहीं था, कोई लेखन प्रणालियाँ नहीं था। तौ पौराणिकता के मौखिक में लेखन एवं मस्तिष्क में होती थी एवं वर्णन ऐसा की जाती थी कि आप मौखिक तौर पर आप उनका फोटो दिखाई पड़ती थी। साफ - साफ आधुनिक और समकालिन साहित्यिक परिदृष्य में पहले अनुवाद का सहारा लेना पड़ता है, इससे बहुत पहले भारत अधिकतर शब्द भावनाओं से प्रगट होकर स्थानीय सांस्कृतिक परिवेष के अनुरूप प्रत्येक क्षेत्रा में भाषा के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता था। इसका एक मुख्य कारण यह हे कि भारत प्रारम्भ से ही सांस्कृतिक और साहित्यिक मौखिक परम्परा की व्यापकता विविधता के बावजूद संस्कृति की एकरूपता का ताना बाना है।

भारतीय सभ्यता की बहुभाषी और बहुसांस्कृतिक प्रकृति को देखते हुए खासकर प्राचीन अनोखे सभ्यता एवं संस्कृति की शैलियों एवं कलाओं की विविधता का उद्भव एवं निरंतर आगे बढ़ते रहे। इनकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का पता हम मौखिक परम्परा में ही निहित है। प्राचीन भारत में लेखन एवं वाचन दोनों चलता था, किन्तु भारतीय संस्कृति का उस सजीव व्यक्ति में निहित होता है जो खेल संस्कृति के मानको को व्याख्याचित्त करता है बल्कि संदर्भ के तौर भी क्रियाषील दिखता है।

भारतीय संस्कृति का मूर्तरूप एक जीते-जागते व्यक्ति में निहित दिखता है जो न केवल संस्कृति के प्रतिमानों की व्याख्या करता है बल्कि स्वयं में एक संदर्भ ईकाई के तौर पर भी होता है। वाणी पूर्णरूप मस्तिष्क में स्थित है और मस्तिष्क पूर्णतया वाणी में स्थापित है अतः सत्य की अभिव्यक्ति हेतु अधिकार एवं प्रभाव से संभावित व्यक्त्वि ही उपयुक्त होता है।

प्राचीन भारत में लेखन एवं वाचन दोनों पद्धतियां थी, दोनों के बीच का बुनियादी अंतर कार्य को भी व्याख्यापित करता है। भावी पीढ़ियों के लिए जीवित व्यक्तित्व का हिस्सा समीप दर्षन दीर्घ के प्रतिरूप में है किन्तु भौतिक प्रतिरूपता को षिलालेख शैली में अभिलेखीय परम्परा के संबंध में काफी स्तर मिलती है। अभिलेखन अपने आप में लेखन का विषुद्ध रूप होता है। यह स्थानीक और स्मारक रूपी होता है जिसका अर्थ यह है कि यह दिक् में निहित और वत्रमान के किसी घटना का गुणगान करने वाला ऐतिहासिक घटना के पाषाण षिलालेख में उल्लेख है कि मौखिक परम्परा में संरक्षित की जिन भाषाओं में आरम्भ हुआ वह रोचक और ऐतिहासिक लाक्षिणक संबंध उद्दत किये गये है। अपनी प्रकृति में आरम्भ मुख्य एवं अंत इस सुगठित एवं सटिक होता है कि समकालिन घटनाओं के एक घटना की व्याख्यास्थित करने के उपरांत कुछ पल सोचा जा सकता है और तथ्य एवं चेतना दोनो वीर समाहित हो जाती है।

लिखित शब्द में अतीत और वत्रमान मौखिक परम्परा भी प्रचलित है, विषेकर लोक साहित्य में गायक्र गायकों के खजाने में अनेकानेक गीतों की भरमार होती है, जिससे विषाल दर्षकदीर्घाओं के सामने गाते है। तालमंडलें समूह में नाटक किसी नाट्य लिपि कविता प्रदर्षित किये जाते हैं और बहुत हद तक बेषक लोक कथाएँ परम्पराएँ रूप दीदी - नानी से बच्चों तक चलती आई है और वह साहित्य के रूप में खासियत दिख रहा है। मौखिक परम्परा के कार्यो की संरचना और वृतांत में परिवत्रन आता रहता है। उदाहरण के लिए एक किस्सा है:-

किसा. किसा. गाम गाम
ओका ते बुढ़ीम दुका़ना*?*
झुरी हालाड. झुरी हालाड.।
ग़् ग़् ग़् ग़्
टोकोर ताम बुढ़ी सुरी दो
मिहूँ गेचोय लेबेत रा़पुत केत्
चेदाक़् मिहूँम लेबेत रा़पुत केत*?*
ग़् ग़् ग़् ग़्
गा़य गेचो बाय तोवायेत्
चेदाक़् गा़य बाम तोवायेत*?*
घास गचो बाड. धासोक़् कान
चेदाक़् घास बाम धासोक़् कान*?*
ग़् ग़् ग़् ग़्

दाक़् गेचो बाय दाक़् एत
चेदाक़् दाक़् बाम दाक़् एत*?*
ग़् ग़् ग़् ग़्
रोटे गेचो बाको़ राक़् एत
चेदाक़् रोटे बापे राक़् एत*?*
ग़् ग़् ग़् ग़्

© 2024 बसन्ती सोरेन, प्रो. डॉ त्रिवेणी नाथ साहू. This is an open access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND) https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

डुलूडाड. बि ´गेचो को जोम होरायेत ले
चेदाक् डुलूडाड. बि ´पे जोम होरायेत को*?*
ग् ग् ग् ग्
ओ़नेको़ गेताले केदोप्
ओ़नेको़ गेताले मा *x*जान
किड़योक - कोड़योक।
अर्थ:- किसा - किसा गाम - गाम
दादी (बुढ़ी मां) कहाँ जा रही हो
लकड़ी खोजने लकड़ी खोजने
ग् ग् ग् ग्
दादी लकड़ी कहां है
बछड़े ने ही तो तोड़ दिया
क्यों बछड़ा तुम तोड़ दिया*?*
ग् ग् ग् ग्
गाय ही तो दुध नहीं देती
क्यों गाय दुध नहीं देती है
घास ही तो नहीं हो रहा है।
ग् ग् ग् ग्
क्यों घास जन्म नहीं लेते हैं
पनी ही तो नहीं पड़ रहा हैं
क्यों पानी नहीं पड़ते हैं।
ग् ग् ग् ग्
बेड़ (मेढक) ही तो नहीं टर - टराते हैं
क्यों मेढक नहीं टर - टराते हैं
सांप ही तो हमलोगों को खा जाते हैं।
ग् ग् ग् ग्
क्यों सांप आप खा जाते हैं
मेरी वही है दोपहर का भोजन एवं रात का भी
किड़योक कुड़योक् खा जाते है।

लोक कथाओं का संपादन करने वाले एक प्रोफेसर ए*के0* रामानुज है उनका कहना है, रसोईघर में दादी नानी द्वारा सुनाई गई कहानी किसी सार्वजनिक स्थान पर एकत्रित वरिष्ठों की समूह को किसी कथावाचक द्वारा सुनाई गई कहानी में फर्क होती है क्योंकि लोक कवियों के हाथों में पहुँच कर पौराणिक गाथाओं के विवरण भी बदल जाते हैं। सत्य यह है कि मौखिक परम्परा की आकार और व्यापकता की कोई सीमा नहीं होती। गायक और दर्षक थकान का अनुभव नहीं करते तथा अनन्त विस्तार की मरीचिका गढ़ते जाते है। अप्रत्यासित लम्बा प्रदर्षन के रूप में ले लेती है।

संताली मौखिक परम्परा में अनेक भक्ति गीत एवं रोचक ज्ञानवर्धक, षिक्षाप्रद, सहगुण तथा जीवन से जुड़ी गहराई बातों की कौषल मौखिक परम्परा के सीखा जाने वाली अनेक लोकगाथाएँ हैं। इसकी कोई खास लेखक एवं कथाकार प्रसिद्धता का नाम रहस्मय में ही है उनको "हापड़ाम या मारे हापड़ाम" के रूप में याद करते है और उनकी जीवन के हर क्षेत्रा में प्रचलित लोक कथाओं का उदाहरण उपयोग में लाकर अपने पूर्वजों की धरोहर की एक विरासत के रूप में संजोये हुए हैं। हमें पता है शहरीकरण एवं अद्यौगीकरण के आधुनिकता समय में मौखिक परम्परा का क्या होगा। पूर्ण साक्षरता अभियान की रफ्तार बढ़ी है और हम जानते हैं कि वह मुद्रा पुरी तरह राजनीतिक है। सर्वश्रेष्ठ प्रयास परम्परा के रूप गुणों की गुणों का बरकरार रखा जा सकता है।

ऐसा समाज जहाँ बोला गया शब्द सर्वोपरि और नैतिक प्रभुत्व रखता है उस समाज से भिन्न होता हैं जहाँ लिखित शब्द को सत्य का दस्तावेज माना जाता है। किसी भी समाज की मौखिक परम्पराओं से प्रेरणा प्राप्त कर उनका साहित्य विकसित किया जा सकता है। मौजूदा लोक परम्परा जीवित रहते हैं तो हमारी सामाजिक समरसता का सहअस्तित्व आमतौर पर लोगों को एक दुसरें पर संबंध एवं लगाव बने रहेगी।

ठस प्रकार हम आधुनिकता के युग में मौखिक परम्परा का भविष्य को कैसे बचाया जाय, सर्वश्रेष्ठ प्रयास यही होगा कि हमें मौखिक परम्परा के गुणों को धार्मिक पद्धतियाँ एवं कला शैलियों के द्वारा जिनका ववास्तविक अंष को बचाया जा सकता है।

// जोहार !!

निष्कर्ष

मौखिक परंपरा संताली साहित्य की आत्मा है। यह परंपरा ना केवल साहित्यिक संरचना का माध्यम है बल्कि सामाजिक ज्ञान, नैतिकता और सांस्कृतिक धरोहर का वाहक भी है। आधुनिकता, शहरीकरण और औद्योगिकीकरण के कारण यह परंपरा संकट में अवश्य है, परंतु अभी भी यह जीवित है। संताली लोकगीत, कहानियाँ और पारंपरिक गीत पीढ़ियों को जोड़ते हैं। आज आवश्यकता है कि इन्हें दस्तावेजीकृत किया जाए, शिक्षण में जोड़ा जाए, और सांस्कृतिक नीति में प्रमुख स्थान दिया जाए। मौखिक परंपरा का संरक्षण केवल आदिवासी समुदाय का नहीं, बल्कि सम्पूर्ण भारत की सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण है।

संदर्भ

1. बोडिंग, पी.ओ. *Santali Folk Tales (1925).*
2. कार्सटियर, आर. *The Santals and their Traditions.*
3. रामानुजन, ए.के. *Folktales from India.*
4. उरांव, एस.के. *आदिवासी लोकसंस्कृति एवं परंपराएँ.*
5. *Ministry of Tribal Affairs, Government of India Reports (Various Years).*
6. नायक, बी.के. *संताली समाज और संस्कृति,* रांची विश्वविद्यालय प्रकाशन।

Creative Commons (CC) License

This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.

© 2024 **बसन्ती सोरेन, प्रो. डॉ त्रिवेणी नाथ साहू**. This is an open access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND) https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/